संम्पादकीय

नवीन रचनाओं पर आधारित राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान की हिन्दी पत्रिका प्रवाहिनी का आठवाँ अंक आपके सम्मुख है।

आज का युग सूचना क्रान्ति के रूप में जाना जा रहा है। कम्प्यूटर, संचार और मुद्रण तकनीक ने हमारे दैनिक जीवन पर विशेष रूप से प्रभाव डाला है। इन्टरनैट और संचार प्रणालियों के माध्यम से आज लोगों को घर बैठे ही अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्ति हो रही है। आधुनिक तकनीक के विकास एवं प्रयोग से पत्रिकाओं के प्रकाशन में एक नया मोड़ आया है। यह हमारे लिये गौरव का विषय है कि हमारे संस्थान में न केवल जलविज्ञान के क्षेत्र में ही, बल्कि अन्य साहित्यिक क्षेत्रों में भी बहुत सी प्रतिभाएं मौजूद हैं। इन्हीं प्रतिभाओं की मूल रचनाओं का संकलन "प्रवाहिनी" आपके सम्मुख है।

सम्पादक मण्डल उन सभी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है जिन्होंने अपने परिश्रम व प्रतिभा से प्रवाहिनी के इस प्रकाशन में किसी भी रूप में अपना योगदान दिया है। हमें आशा है कि आप सभी लोग भविष्य में भी प्रवाहिनी रूपी दीप को प्रज्वलित करने में हमारी सहायता करते रहेंगे। हम अपने निदेशक महोदय के भी आभारी हैं जिनकी प्रेरणा एवं उत्साहवर्धन से ही इस पत्रिका का प्रकाशन सम्भव हो सका।

सम्पादकीय मण्डल